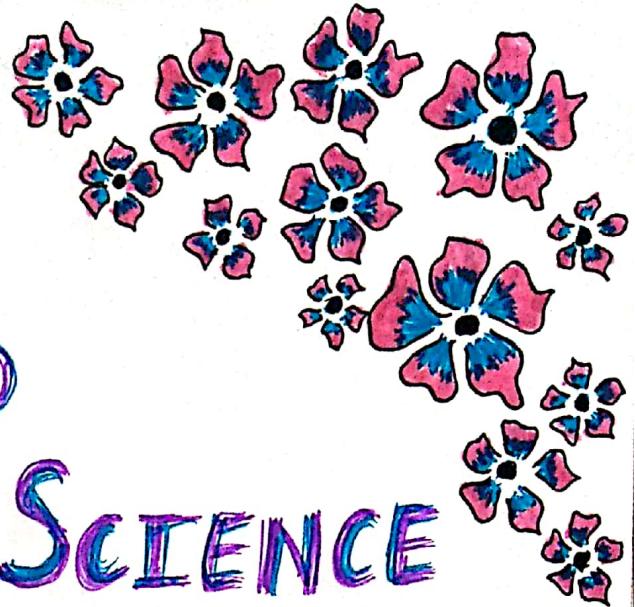


THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE



SUB: हिन्दी

TOPIC: "ग्रन्ति वार्ता"

"हिन्दी असाइनमेंट"

Submitted to,

Dr. Suresh Rathod Sir

Assistant professor

Dept. of Hindi

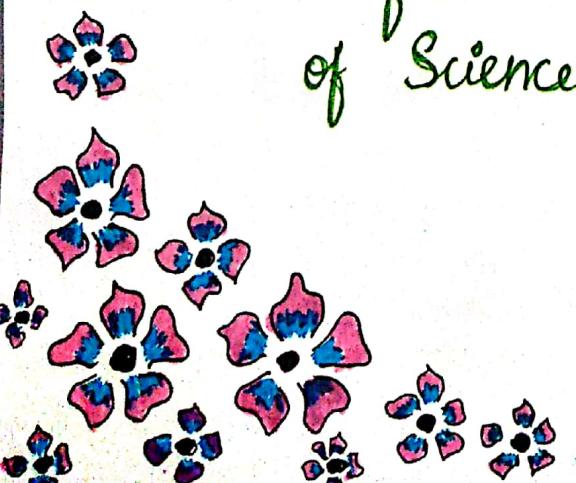
The Oxford College
of Science.

Submitted by,
Rafia Anjum. S.
19RNS85231

II year, BcZM6

3rd SEM

The Oxford College
of Science.



INDEX

SL. No.	CONTENT	Pg No.
01.	ग्लोबल वार्मिंग	01
02.	- प्रक्षावना	1 - 2
03.	- परिमाणा	2
04.	- अर्थ	2 - 3
05.	प्राकृतिक कारण	4 - 5
06.	जागरूकता	5
07.	रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन	6 - 8
08.	ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय	9 - 10

ग्लोबल वार्मिंग

प्रस्तावना :-

ग्लोबल वार्मिंग हमारे देश के अलावा पूरे देश के लिए बहुत बड़ी समस्या है और यह धरती के बोतावरण पर लगातार बढ़ रही है।

इस समस्या से ना केवल मनुष्य, धरती पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी को नुकसान पहुंचा रहे हैं और इस समस्या से निपटने के लिए प्रत्येक देश कुछ ना कुछ उपाय लगातार कर रहा है पंशु यह ग्लोबल वार्मिंग घटने की बजाए निःशरू बढ़ रही रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग के सबसे बड़े जिम्मेदार स्वयं मानव हैं। उसकी गतिविधियां ही कुछ ऐसी हैं कि हर तरफ लगातार ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रहा है मनुष्य की इन गतिविधियों से खतरनाक गैस कार्बन डाइ-ऑक्साइड, मीथन, नाइट्रोजन ऑक्साइड,

इत्यादी का मीन हाउस ग्रैंडी की मात्रा में
वातावरण में बढ़ोतारी हो रही है।

ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा :-

धूखी के वातावरण में तापमान के अप्रा-
-तार हो रही विश्वापी बढ़ोतारी को
ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ :-

पृथकी के निकट स्थित हवाई और महासागर
की ओसत तापमान में वीसवीं शताब्दी
से हो रही वृद्धि और उसकी अनुमानित
निरंतरना है पृथकी की सतह के निकट
विश्व की वायु की ओसत तापमान में
2500 वर्षों के दौरान 0.74 फैस
माइनस 0.8 डिग्री सेल्सियस (1.33
फैस माइनस 0.32 डिग्री राफ)।



हालोवल वार्मिंग का प्राकृतिक कारण :-

हालोवल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार मीन हाउस ग्रैस हैं मीन हाउस ग्रैस के ग्रेस होती है जो बाहर से मिल रही गर्भीय ऊष्मा को अपने अंदर सोखती है मीन हाउस ग्रैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण ग्रैस कार्बन डाइऑक्साइड है जिसे हम जीवित प्राणी अपने साथ के साथ उत्सर्जित करते हैं पर्यावरण वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी में वायुमंडल में बातावरण में प्रवृत्त कर यहां का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है कार्बन डाइऑक्साइड, वैज्ञानिकों के अनुसार इन ग्रैसों का उत्सर्जन इसी तरह चलता रहा तो २। १० शतांशी में हमारे पृथ्वी का तापमान 3° से 8° स्टीलियस तक बढ़ सकता है।

जागरूकता :—

रसोबल वार्सिंग को सुनने का कोई
इलाज नहीं है। इसके बारे में सिर्फ जागरू
-कता ~~फैलाकर~~ इससे लड़ा जा सकता है।
हमें अपनी पृथ्वी को सही मायनों में 'ग्रीन'
बनाना होगा। अपने 'कार्बन फुटप्रिंट' को
कम करना होगा।

हम अपने आस-पास के वातावरण को
प्रदूषण से जितना मुक्त रखेंगे, इस पृथ्वी
को बचाने में अनी ही बड़ी भूमिका निभाराएँ।



ग्रीन हाउस गैसों का उत्पर्जन

माना जा रहा है कि इसकी वजह से उष्णकटिबंधीय शैक्षिकानों में नमी बढ़ेगी। मैटानी इलाकों में भी इतनी गर्मी पड़ेगी जितनी कभी इतिहास में नहीं पड़ी।

इस वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियाँ चढ़ा दोंगी। हमें ध्यान में रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाशज न करें कि वह हमारे आसीन को खत्म करने पर ही आमादा हो जारा। हमें इन सब बातों का ध्याल रखना पड़ेगा।

आज हर व्यक्ति पर्यावरण की बात करता है। प्रदूषण से बचाव के उपाय साचता है। व्यक्ति स्वरूप और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में रहने के अधिकारों के प्रति सजग होने लगा है और अपने दायित्वों को समझने लगा है। वर्तमान में विश्व ग्लोबल वार्मिंग के सवालों से जूझ रहा है। इस सवाल का जवाब जीनो के लिये विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग और शोध हुई है। उनके अनुसार अगर प्रदूषण के लाने की रफ़तार इसी तरह बढ़ती

रही तो अगले हो दृशकों में धरती का औसत नापमान 0.3 डिग्री सेलिसयन प्रति दृशक के हर से बढ़ेगा। जो विंशजनक है।

नापमान की इस वृद्धि से विश्व के सारे जीव-जंतु बेदाल हो जाँगे और उनका जीवन खतरे में पड़ जारागा। पड़-पौधों में भी इसी तरह का बदलाव आरागा। सागर के आस-पास रहने वाली आबाढ़ी पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ेगा।

जल सार ऊपर उठने के कारण सागर नह पर बसे ज्यादातर शहर इन्हीं सागरों में समा जाँगे। दाल ही में कुछ वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि लवायु में बिंगाड़ का सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो कुपोषण और विषाणु जनित रोगों से होने वाली मौतों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी हो सकती है।

इस पारिस्थितिक स्फट से निपटने के लिये मानव को सचेत रहने की जरूरत है। हुनिया भर की राजनीतिक शक्तियाँ इस बहस में उलझी हैं कि ग्रामती धरती के लिये किसे जिम्मेदार ठहराया जारा।

हलोवल वार्मिंग पर कड़ा प्रहार,
वृक्ष लगाएं एक हजार।



© HindiKiDuniya.com

हलोबल वार्मिंग शेकने के उपाय

ज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का कहना है कि हलोबल वार्मिंग के कमी के लिए मुख्य स्थप से सी.एफ.सी. गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा और इसके लिये फ्रिज़, रायर कंडीशनर और इसरे कूलिंग मशीनों का इस्तेमाल कम करना होगा या रासी मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी. गैसों कम निकलती हों।

आधारिक इकाइयों की विमनियों से निकलने वाला धुआँ हानिकारक है और इनसे निकलने वाला कार्बन डाइऑक्साइड गमी बढ़ता है। इन इकाइयों में प्रदूषण रोकने के उपाय करने होंगे।

वाहनों में से निकलना वाले धुएँ का प्रभाव कम करने के लिये पर्यावरण मानकों को सख्ती से पालन करना होगा। उद्योगों और खासकर रासायनिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे को फिर से उपयोग में लाने लायक बनाने की कोशिश करनी होगी और

प्राथमिकता के आधार पर पड़ो की कटाई शोकनी होगी और जंगलों के संरक्षण पर लल केना होगा।

अक्षय ऊर्जा के उपायों पर ध्यान देना होगा यानि अगर कोयल से बनने वाली बिजली के बदले पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पनबिजली पर ध्यान दिया जारा तो वातावरण को गम्भीर करने वाली चीजों पर नियंत्रण पाया जा सकता है तथा साथ ही जंगलों में आग लगाने पर शोक लगानी होगी।

एक हरी पृथ्वी वास्तव में
एक स्वच्छ पृथ्वी है

